سُوْرَةُ الْكٰفِرُوْنَ مَكِّيَّةٌ

सूरह काफ़िरून मक्का में उतारी गई (नाजिल हुई)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

आरंभ (शुरू) अल्लाह के नाम से जो अत्यंत दयावान, निरंतर (असीम) दयाशील है।

قُلْ يٰٓاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۙ (1)

(हे नबी ﷺ) कहो ! हे काफ़िरों (अस्वीकार करने वालों)

لَآ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ۙ (2)

मैं (उसकी) उपासना (बन्दगी) नहीं करता, जिसकी तुम उपासना करते हो।

وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۚ (3)

और ना तुम (उसकी) उपासना करने वाले हो, जिसकी मैं उपासना करता हूँ।

وَلَآ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ۙ (4)

और ना मैं (उसकी) उपासना करने वाला हूँ, जिसकी तुमने उपासना की।

وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۭ (5)

और ना तुम (उसकी) उपासना करने वाले हो, जिसकी मैं उपासना करता हूँ।

لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ ۧ (6)

तुम्हारे लिए तुम्हारा धर्म (दीन) और मेरे लिए मेरा धर्म (दीन)।